

Sumitranandan Pant

Sumitranandan Pant (May 20, 1900 – December 28, 1977) born in Kausani in Almora district of Uttarakhand, was one of the major literary figures of modern Hindi literature who founded the *Chhayavaad* format of Hindi poetry. His childhood name was Gusain Dutt. Shri Pant spent his childhood and adolescence in the picturesque Kumaon hills of Uttarakhand. Having finished his early education in Almora, he went to Queen's College in Kashi (Varanasi) and then attended Prayag University where he spent some time and published his collections of poems "Veena" and "Pallav" under the name "Sumitranandan Pant". It was shortly after Mahatma Gandhi's call for Satyagraha Movement that Shri Pant went to Sri Aurobindo's Ashram in Pondicherry and it was from that point onwards that he expanded his horizon and started writing in broader contexts. He was influenced by the progressive and philosophical writings of Shri Aurobindo and his essays and poems showed a philosophical touch under the influence of Shri Aurobindo.

Sumitranandan Pant attained most of his literary achievements in Allahabad. His initial writings were published as *Yugvani* and *Gramya*. His poems were impressions of his thoughts on the then socio-political scenario and he drew inspiration from his scenic surroundings in Kumaon.

Chhayavaad refers to the era of Neo-romanticism in Hindi Literature, particularly Hindi poetry (1917-1938) which was marked by an upsurge of romantic and humanist content. It saw a renewed sense of the self and personal expression which was visible in the writings of that time. *Chhayavaad* is known for its leaning towards themes of love and nature.

Sumitranandan Pant had taken to poetry when he was just seven years old and was studying in the 4th grade. Having spent his childhood surrounded by natural beauty of the mountains and their flora and fauna; it was only natural for him to have been inspired by the beauty around him. His earlier works reflect a sublime touch of the scenic serenity. The period from 1907-1918 has been acknowledged by Shri Pant himself, as the first phase of his notable writing career.

The poems that he wrote during this period have been compiled and published in "Veena" (1927).

Shri Pant wrote mostly in Sanskritised Hindi. He authored twenty eight published works including poetry, verse plays and essays. Some of his prominent works are *Chidambara*, *Veena*, *Pallav*, *Gunjan*, *Gramya*, *Yugant*, *Yugvani*, *Lokayatan*, *Kala aur Boodha Chand*.

'Chidambara', a collection of his poems and writings is a virtual magnum opus with the imprints of natural beauty of hills writ large in each stanza. Even at a very young age the promise and potential he showed in his creativity was unmatched. His poetry epitomized the Indian thought of Satyam, Shivam, Sundaram. His eminence can be gauged from the fact that he was made a Fellow of the Sahitya Academy, way back in 1969, along with Shri C. Rajagopalachary. He also received the Nehru Peace Prize for International Understanding.

Sumitranandan Pant was awarded the Jnanpith Award in 1968 for a collection of his most famous poems, "Chidambara". He was awarded the Nehru Peace Prize by the Soviet Union for "Lokayatan" and the "Sahitya Kala Academy" award for "Kala aur Boodha Chand". He was awarded the Padma Bhushan in 1961. Sumitranandan Pant died on 28 December, 1977.

Kausani, near Almora in Uttarakhand, has a museum called "Sumitranandan Pant Gallery" dedicated to the memory of this great poet and writer. This museum contains manuscripts of the poems written by Shri Pant, draft copies of his literary works, articles of his day-to-day use, the awards received by him and also the letters written by him and received by him.

Department of Posts is happy to release a Commemorative Postage stamp on Shri Sumitranandan Pant.

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent

Stamp/FDC/ : Nenu Gupta

Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



विवरणिका BROCHURE

सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत (20 मई, 1900 – 28 दिसम्बर, 1977) का जन्म उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले के कौसानी में हुआ था। वे आधुनिक हिंदी साहित्य के महानतम स्तंभों में से एक थे। सुमित्रानंदन पंत ने हिंदी काव्य की छायावाद धारा का सूत्रपात किया। बालपन में उनका नाम गुसाईं दत्त था। सुमित्रानंदन पंत का बचपन और उनकी किशोरावस्था उत्तराखण्ड के कुमाऊं की मनोरम वादियों की गोद में व्यतीत हुए। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में प्राप्त की। तत्पश्चात् वे वाराणसी के क्वींस कॉलेज के छात्र रहे, जिसके बाद उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। यहीं रहते हुए उन्होंने सुमित्रानंदन पंत के नाम से अपने काव्य संकलनों "वीणा" और "पल्लव" का प्रकाशन किया। महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन के आह्वान ने सुमित्रानंदन पंत को गहरा प्रभावित किया और वे पांडिचेरी स्थित श्री अरविंद आश्रम पहुंचे। इसी के बाद उन्होंने अपने दृष्टिफलक का विस्तार किया और व्यापक विषयों पर लेखन कार्य करने लगे। सुमित्रानंदन पंत, श्री अरविंद के प्रगतिशील और दार्शनिक लेखन से अत्यंत प्रभावित थे। श्री अरविंद के प्रभाव के कारण उनके निबंधों और काव्य में दार्शनिक छटा मुखर रूप से विद्यमान है।

सुमित्रानंदन पंत ने इलाहाबाद में रहते हुए ही अधिकतर साहित्यिक उपलब्धियां प्राप्त कीं। उनकी प्रारंभिक रचनाएं "युगवाणी" और "ग्राम्या" शीर्षक से प्रकाशित हुईं। सुमित्रानंदन पंत, कुमाऊं के वातावरण के मोहक सौंदर्य से प्रेरणा पाते थे और उनकी कविताएं तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य पर उनके चिंतन का प्रतिबिंब होती थीं।

छायावाद, हिंदी साहित्य, विशेष रूप से हिंदी काव्य की नव-रुमानवाद धारा का वह युग (1917-1938) था, जब रचना-कर्म में रुमानी और मानवतावादी विषय-वस्तु चरम पर थी। इस दौर की रचनाओं में आत्मानुभूति और निजी अभिव्यक्ति का एक प्रबल और नवीन स्वरूप सामने आया। छायावाद युग, प्रेम और प्रकृति के विषयों पर लिखी रचनाओं के लिए जाना जाता है।

सुमित्रानंदन पंत ने तभी से काव्य रचना प्रारंभ कर दी थी, जब वे मात्र 7 वर्ष के थे और चौथी कक्षा के छात्र थे। रमणीय वादियों और वहां के वनस्पति तथा प्राणि-जगत के नैसर्गिक सौंदर्य के बीच बचपन व्यतीत करने के बाद यह उनके लिए स्वाभाविक ही था कि वे अपने आस-पास के इस मोहक सौंदर्य से सदा प्रेरणा पाते रहे। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में इसी रमणीय प्रशान्ति की अलौकिक छटा देखने को मिलती है। 1907-1918 की अवधि को सुमित्रानंदन पंत ने स्वयं ही

अपने समस्त लेखन कार्य का पहला चरण माना है। इस दौरान रचित उनकी कविताओं का संकलन और प्रकाशन "वीणा" (1927) में हुआ।

सुमित्रानंदन पंत अपनी रचनाओं में मुख्यतः संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग करते थे। उन्होंने 28 कृतियों की रचना की, जिसमें काव्य, काव्य-नाटक तथा निबंध शामिल थे। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'चिदंबरा', 'वीणा', 'पल्लव', 'गुंजन', 'ग्राम्या', 'युगांत', 'युगवाणी', 'लोकायतन' तथा 'कला और बूढ़ा चांद' सम्मिलित हैं।

कविताओं तथा अन्य रचनाओं का उनका संकलन 'चिदंबरा', सुमित्रानंदन पंत की महानतम कृति है। इसका हर पद्यांश सुरम्य वादियों के प्राकृतिक सौंदर्य में सराबोर है। अत्यंत कम उम्र में भी अपनी सृजनात्मकता में सुमित्रानंदन पंत जिस मेधा और क्षमता का परिचय देते थे, वह अप्रतिम थी। उनका काव्य, सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् के भारतीय दर्शन का मूर्त रूप है। उनकी विशिष्टता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उन्हें सी. राजगोपालाचारी के साथ 1969 में ही साहित्य अकादमी का फेलो चुन लिया गया था। उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय नेहरू शांति पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

सुमित्रानंदन पंत को 'चिदंबरा' में संकलित उनकी सबसे लोकप्रिय कविताओं के लिए 1968 में ज्ञानपीठ सम्मान प्रदान किया गया। "लोकायतन" के लिए उन्हें सोवियत संघ द्वारा नेहरू शांति पुरस्कार तथा "कला और बूढ़ा चांद" के लिए साहित्य कला अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। 1961 में उन्हें पद्म भूषण से अलंकृत किया गया। 28 दिसम्बर, 1977 को सुमित्रानंदन पंत का निधन हो गया।

उत्तराखण्ड में अल्मोड़ा के निकट कौसानी में इस महान कवि और लेखक की स्मृति को समर्पित "सुमित्रानंदन पंत दीर्घा" नामक एक संग्रहालय है। इस संग्रहालय में सुमित्रानंदन पंत की लिखी कविताओं की पांडुलिपियां, उनकी अन्य साहित्यिक कृतियों के प्रारूप, उनके दैनिक प्रयोग के लेख और उन्हें प्राप्त हुए पुरस्कारों आदि के साथ-साथ उनके लिखे और उन्हें प्राप्त हुए पत्रों को भी सहेजा गया है।

डाक विभाग, सुमित्रानंदन पंत पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक-टिकट/ : निनु गुप्ता
प्रथम दिवस आवरण/
विरूपण



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	3.00 लाख
Stamps Printed	:	0.3 Million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.